एड्स इनफोनेट

AIDS InfoNet

www.aidsinfonet.org

फैकटशीट नम्बर 484

HIV AND INFLAMMATION
एच आई भी एंव ज्वलनशीलता

ज्वलनशीलता क्या है ?

ज्वलनशीलता एक शीघ्र प्रतिउतर है किसी भी जखम का। यह एक अनिर्दिष्ट प्रत्युत्तर है प्रतिरोध क्षमता का। किसी भी तरह के जखम या संक्रमण के आधार पर यह भिन्न नहीं होता।

शरीर के ज्यादातर धाव भरने के उपकरण रक्त में प्रवाहित होते है। इन सब में है एन्टीबॉडीज, टी-सेल एवं अन्य सफेद रक्त कोशिकाएँ, रक्त जमने के कारक, रसायनिकजो कि जीवाणुओ का मारते है एं पोषक तत्व जो नष्ट हुए कीषिका को बनाता है।

जखमी कोशिकाएँ रसायन छोड़ती है जो प्रतिरोधक प्रणाली से संचार करती है। वे जखमी कोशिकाएँ एवं रसायनिक तत्व को आकर्षित करती है। ज्वलनशीलता जखम भरने के तत्व को रक्त प्रवाह छोड़ने में मदद करती है एवं जखमी काशिकाअै के उपर काम करती है। रक्तकोश बड़ा होता है। जखमी स्थान का रक्तप्रवाह बढ़ाता है। ज्वलनशीलता रक्तकोश के संस्चना को बदल देता है, एंव प्लाजमा का आसपास के टिशु में प्रवेशकरना आसान बना देता है। जिस कारण वहाँ फुल जाता है। ज्वलनशीलता से लाल होना, गर्म हाना एवं दर्द भी होना है। इसके अलावा यह टिशु के कार्य को कम करता है।

रक्त का जमना भी ज्वलनशीलता का भाग है। यह चमड़े में हो सकता हैष जैसे कटे हुए स्थान से रक्तप्रवाह राकना) या शरीर के अन्दर (जैसै जीवाणु के चारोतरफ एक बाधा खड़ा करना या जखमी स्थान को संरक्षण देना, रक्तकोश के क्रम में)।

रक्त जमाव की प्रक्रिया का सम्मंजस्य होता है जभाव का टूटने अैर हटने को साथ। इस प्रक्रिया को फाइब्रिनोलिसिस कहते है। फाईब्रिन एक प्रोटीन है जो शक्का बनाती है। लाइसिस का मतलब है कम होना या क्षय होना।

तीक्ष्ण एवं दीर्घस्थायी ज्वलन

तीक्ष्ण ज्वलन ज्यादातर होता है शारिरिक जखम के कारण जैस कि कटने से या खिांचाव से या सीमित स्थान के संक्रमण से तीक्ष्ण ज्वलन खतम होता है जब निर्दिष्ट रसायनिक तत्व ज्वलन को खतम करने के लिए प्रवाह होते है।

लगातार ज्वलन बहुत सारी बीमारी से युक्त होता है। इसमें हार्टफेल, किडनी की समस्या, चयापयय के लक्षण, डाइबीटिज, डीमेनसीया एवं कमजोर होना शामिल है।

एबंआईभी कारण है ज्वलनशीलता का :

एच आई भी एक दीर्घस्थायी संक्रमण है। यहाँ तक कि वी बीमार जिनको गुप्त जीवाणु है नया जीवाणु वनाने लगते है। जिसके कारण लगातार ज्वलन होता रहता है। कम जीवाणु होने से ज्वलन भी कम होता है। एन्टीरेट्रोवाइरल चिकित्सा ज्वलन को कम करना है लेकिन साधारण स्तर तक नहीं।

समय के साथ एच आई भी प्रतिरोध क्षमता को कमजोर बना देता है। पूराना संक्रमण वापस लौट सकता है। प्रायः सभी जिनके एचआइ भी है, साइटोमेगालोवाइरस (सी एस भी, फैक्टशीट 504 देखो) से भी संक्रमित है। सुप्त सी एम भी संक्रमण सक्रिय हो सकता है एच आई भी संक्रमित लोगों में एवं ज्वलनशीलता को अैर बढ़ाने का कारण बनता है।

दूसरे संक्रमण या बीमारी (को-मोरबीडीवे) को समझता जरुरी है उनके स्वास्थ्य के लिए जिनको एच आइ भी है। हेपाटाइटिस या हरपिस संक्रमण (फैक्टशीट 507 देखो) भी बहुत आभ है इनमें।

रिसनेवाले आंत के लक्षण समूह :

मुह अैर पाचन नथी, चमड़े के जैसा ही शरीर का बाहरी खतरों से सुरक्षण करते है। पाचन नली के उपरी अंत पर मुह होता है। दाँत का खराब स्वास्थ्य से आभ संक्रमण एवं ज्वलन हो सकता है (फैक्टशीट 653 देखो)।

साधारणतः आंतमें 70% प्रतिरोधक कोश रहता है। अंतड़ियों का वर्ग क्षेत्र करीब एक फुटबॉल मैदान के बराबर होता है। आंत का प्रतिरोधक प्रणाली को

आंत-युक्त लिम्फॉयड टिसु या गाल्ट (GALT) कहा जाता है। यह भोजन के जीवाणुओ से शरीर की रक्षा करता है। एच आइ भी गाल्ट को नष्ट करता।

ज्वलन का मापदंड

एच आई बी लोगों में ज्वलन बताता है, कुछ तत्वों का उच्च स्तर में एक में विद्यमान रहने को :

- इन्टरलिउकिन-6 ज्वलन को बढ़ाने एंवं कम करने दोनों में शमिल है। यह व्यायाम के बाद बहुत जल्दी बढ़ जाता है।
- सी-रिएक्टिव प्रोटीन समझा जाता है कि यह नष्ट हुए कोष के साथ जुड़कर उन पस्तुओं को आर्कषित करता है जो कि इनसब को निकाल देता है। यह साधरण ज्वलन को मापदंड है। यह संक्रमण के समय बहुत जल्दी एंव अचानकं से बढ़ जाता है।
- डी डाइमर रक्त के शक्का टुटने में उत्पन्न होता है। यह एक साधारण ज्वलन का मापदंड है। यह रक्त के शक्का, बो भी जो नस के तह में या फेफड़े में जमा होता है। विशेषतः उसका पता लगाने में व्यवहार होता है।
- सिस्टेटिन सी प्रधानतः किडनी के स्वास्थ्य को सूचित करता है। हॉलाकि उच्च सिस्टेटिन सी स्तर को दिल की बीमारी, लरने की समस्या एवं उच्च मृत्यु दर से जोड़ा जाता है।

एचआई भी ज्वलनशीलता का उपचार

शोधकर्ता उन सभी ज्वलन विरोधी औषध को देख रहें है जो कि दूसरे बीमारियों में व्यवहार किया जाता है। जैसे कि रिउमाटॉयड आर्थराइटिस, एवं कोशिश कर रहे है अन्य अनुसंधान से सीखने का जो कि सक्रिय प्रतिरोधक, ज्वलनशीलता एवं बढ़ते उम्र पर है।

एच आइ भी के अनुसंधान का दूसरा क्षेत्र है आंतो में बैक्टेरिया के परिवेष पर ये बैक्टेरिया बहुत सारे बीमारियों के निष्कर्ष पर प्रभाव डालता है। वे सारे हस्तदोप जो बैक्टेरिया को प्रभावित करते है। इसमें सहायता कर सकते है। इनमें 'प्रोषायोटिक्स' जैसे कि एसिडो-फिलस एवं अन्य जीवित जीवाणु समूह जो कि आंतो मे अच्छे बैक्टेरिया के बढ़ते के लिए उत्तेजित करते है।

आधारभूत निष्कर्ष

ज्वलनशीलता एक जटिल प्रक्रिया है। हाँलाकि ज्वलनशीलता दीर्घस्थायी हो सकता है। दीर्घस्थायी ज्वलन के कारण टिशु का क्षति होता है एवं दाग-छब्बा हो जाता है। रक्तकोश प्रवाह होता रहता है। सफेद रक्त काशिकारूँ रक्त को छोड़ना जारी रखता है एवं टिशु में इसका जभाव होता है। प्रतिरोधक कोशिकाएँ नष्ट हो सक्ती है एवं ठीक से काम करना बंद कर देती है। अन्ततः दीर्घस्थायी ज्वलन आस-पास के टिशु को नष्ट कर वहाँ दण-छब्बा वाले टिशु को उत्पन्न करती है। इसके कारण एलर्जी, एस्थमी या स्वप्रतिरोधक बीमारी जैसे आर्थराइटिस एवं विभिन्न क्षयरोग उत्पन्न हो सकती है। स्वप्रतिरोधक बीमारी में, शरीर कभी कभी एंटीबॉडीज बनानेन लगता है जो कि स्वस्थ कोष के उपर आक्रमण करती है। है शुरुआती संक्रमण के दौरान।

आंत का ज्वलन, जीवाणुओं को आंत से शरीर के रक्तप्रवाह में प्रवेश करने को आसान कर देता है। यह रिसनेवाला आंत पूरे शरीर में ज्वलन (प्रणालीयों में) पैदा करता है। आंत का ज्वलन, पोषक तत्व को शोषण में भी असर (खराब शोषण) करता है।

लाइपोपॉलिझेकारइड्स (एल पी एस) वे कण है जो कि कुछ बेक्टेरिया के कुछ भाग को ढ़कते है। ज्यादातर अंतरिड़यों में पाए जाते है। एल पी एस मजबूत प्रतिरोधक जवाब उत्पन्न करता है। रक्त में इसका उच्चस्तर पर रहना, रिसनेवाले आंत का लक्षण समुह है।

तीक्ष्ण ज्वलन शरीर के जखम भरने का साधरण प्रक्रिया है। दीर्घस्थायी ज्वलन शरीर को हानि पहुँचा सकती है एवं यह दीघ३कालीन स्वास्थ्य समस्या से जुड़ा होता है एवं बढ़ते उम्र से भी।

एच आइ भी एक ज्वलनशीलतावाली बीमारी है एवं जिसके कारण तीक्ष्ण ज्वलन होता है। यह शारिरिक बदलाव जो कि उम्र से जुड़ी होती है। उसे तेज करती है।

ज्वलनशीलता का विभिन्न संभावित उपचार पर शोध चल रहा है।

लिखा गया अगस्त 4, 2010 को

A project of the New Mexico AIDS Education and Training Center. Partially funded by the National Library of Medicine
Fact Sheets can be downloaded from the Internet at http://www.aidsinfonet.org